आर्डर-फार्म

विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि

हिन्दी प्रकाशन

❑ **निर्मल धारा धर्म की** *१९९५, पृष्ठ १६०, रु. ६५/-*
धर्म न हिंदू है न बौद्ध, न मुस्लिम है न जैन, न सिक्ख है न ईसाई। धर्म सार्वजनीन है। इन्हीं प्रवचनों का संक्षिप्त संकलन इस पुस्तक में संगृहीत है।

❑ **प्रवचन सारांश** *१९९२, पृष्ठ १२४, रु. ५०/-*
दस-दिवसीय शिविरों में पू. गुरुजी द्वारा दिये गये प्रवचनों का सारांश संकलन है।

❑ **जागे पावन प्रेरणा** *१९९४, पृष्ठ २२४, रु. ९०/-*
इस पुस्तक में पू. गुरुजी ने सरल तथा सुस्पष्ट ढंग से बुद्ध का जीवन और उनके उपदेशों का वर्णन किया है।

❑ **जागे अन्तर्बोध** *१९९४, पृष्ठ २०४, रु. ८५/-*

❑ **धर्मः आदर्श जीवन का आधार** *१९९६, पृष्ठ १०८, रु. ४५/-*
इस पुस्तक में सरल तरीके से धर्म की व्याख्या की गयी है।

❑ **धारण करे तो धर्म** *१९९९, पृष्ठ १८४, रु. ८०/-*
बुद्ध के जीवन से संबंधित तथा धर्म की व्याख्या करनेवाली प्रेरणादायक कहानियां।

❑ **क्या बुद्ध दुःखवादी थे?** *२०००, पृष्ठ ९८, रु. ४५/-*
बुद्ध दुःखवादी नहीं थे। उदाहरण के साथ विस्तार से इसे यहां समझाया गया है।

❑ **मंगल जगे गृही जीवन में** *२०००, पृष्ठ ११२, रु. ५०/-*
बुद्ध की वाणी पर आधारित इस पुस्तक में यह समझाया है कि गृहस्थ गृही जीवन में कैसे सामंजस्य स्थापित कर सकता है।

❑ **धम्मवाणी संग्रह** *२०००, पृष्ठ ९२, रु. ४५/-*
विपश्यना (हिन्दी) पत्रिका से विषयवार मूल्यवान संग्रह। इस में पालि गाथाओं के साथ-साथ उनके हिन्दी अनुवाद भी हैं।

❑ **विपश्यना पगोडा स्मारिका** *२०००, पृष्ठ १८६, रु. १००/-*
मुंबई के निकट बननेवाले विश्व विपश्यना पगोडा की नींव रखे जाने के शुभ अवसर पर लिखे गये पत्रों का संग्रह।

❑ **सुत्तसार - १** *२००१, पृष्ठ २४०, रु. ९५/-*
इसमें दीघनिकाय और मज्झिमनिकाय के सुत्तों का सार है।

❑ **सुत्तसार - २** *२००१, पृष्ठ २०८, रु. ९०/-*
इसमें संयुत्तनिकाय के सुत्तों का सार है।

❑ **सुत्तसार - ३** *२००१, पृष्ठ १७२, रु. ८०/-*
इसमें अंगुत्तरनिकाय और खुद्दकनिकाय के सुत्तों का सार है।

❑ **धन्यबाबा (आत्मकथन)** *२००२, पृष्ठ १३०, रु. ५८/-*
पूज्य गुरुजी के बचपन में अपने बाबा का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। उन्हीं बाबा के प्रति कृतज्ञता में लिखे उनके दोहे और उनके जीवन के रोमांचकारी संस्मरणों को इस पुस्तक में विस्तार से लिखा है।

❑ **कल्याणमित्र सत्यनारायण गोयन्का - व्यक्तित्व और कृतित्व, लेखक - श्री बाल कृष्ण गोयन्का** *२००२, पृष्ठ १२४, रु. ६५/-*
पू. गुरुजी के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं का तथा उनके द्वारा विश्व के कल्याण के लिए किये जा रहे कार्यों का विस्तार से वर्णन है।

❑ **पातंजल योगसूत्र, लेखक - सत्येन्द्रनाथ टंडन** *२००३, पृष्ठ १२२, रु. ६०/-*

❑ **आहुनेय्य, पाहुनेय्य, अंजलिकरणीय डॉ. ओम प्रकाश जी** *२००३, पृष्ठ ७०, रु. ४०/-*
इस पुस्तक में डॉक्टर साहब के मौखिक कथनों तथा उनसे प्राप्त हुए पत्रों में अंकित पंक्तियों का विवरण है।

❑ **राजधर्म** *२००३, पृष्ठ ९४, रु. ४५/-*

❑ **आत्म-कथन** भाग १ *२००३, पृष्ठ ११६, रु. ५५/-*
यह पूज्य गुरुजी की आत्मकथा है जिसमें उन्होंने अपनी आध्यात्मिक यात्रा का सजीव वर्णन किया है। इसमें उनका कवि हृदय और स्वदेश प्रेम भी झलकता है।

❑ **अंगुत्तर निकाय (हिन्दी अनुवाद) भाग-१** *२००४, पृष्ठ ३३६, रु. १२५/-*
इस पुस्तक में एक्क निपात से लेकर एकादशक निपात में एक से लेकर उत्तरोत्तर बढ़ते क्रम से ग्यारह धर्मों के संबंध में भगवान बुद्ध के उपदेश संगृहीत हैं।

❑ **केंद्रीय कारागृह जयपुर, विपश्यना का प्रथम जेल शिविर** *२००५, पृष्ठ ९२, रु. ५०/-*

❑ **विपश्यना : लोकमत भाग-१** *२००५, पृष्ठ १४०, रु. ६५/-*
इसमें विपश्यना के बारे में 'लोकमत' जानने के लिए विपश्यना शिविर में भाग लेने वाले साधकों-साधिकाओं के लेख एवं दस-दिवसीय शिविर के दसवें दिन निजी अनुभवों की जानकारी प्रस्तुत है।

❑ **विपश्यना : लोकमत भाग-२** *२००५, पृष्ठ १७६, रु. ७०/-*
इसमें विपश्यना के बारे में 'लोकमत' जानने के लिए दीर्घ शिविर किये साधकों के अनुभव प्रस्तुत हैं।

❑ **अग्रपाल राजवैद्य जीवक** *२००५, पृष्ठ ४०, रु. ३०/-*
इस पुस्तक में बुद्धकालीन आयुर्वेद चिकित्सक जीवक का, जो श्रोतापन्न थे उनका जीवन वृत्तांत दिया हुआ है। जीवक भगवान बुद्ध और उनके भिक्षुसंघ की चिकित्सा-सेवा करते थे।

❑ **मंगल हुआ प्रभात** *१९९०, पृष्ठ २८४, रु. १२०/-*
पू. गुरुजी द्वारा प्रणीत दोहों का एक अमूल्य संग्रह। साधकों तथा अन्यों द्वारा प्रशंसित।

❑ **सम्राट अशोक के अभिलेख** *२००६, पृष्ठ १७६, रु. ८५/-*
भारत तथा उससे बाहर के देशों में सम्राट अशोक के अभी तक ४२ अभिलेख खोजे जा चुके हैं। इस अभिलेखों में सम्राट के जो अनुदेश अंकित हैं उनकी जानकारी हर किसी को होना नितांत आवश्यक है। इसी उद्देश्य से इस पुस्तक को प्रकाशन में लाया गया है।

❑ **प्रमुख विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायणजी गोयन्का का संक्षिप्त जीवन-परिचय** *२००६, पृष्ठ ३०, रु. ३०/-*

❑ **अहिंसा किसे कहें?** *२००६, पृष्ठ ३२, रु. २५/-*
इस पुस्तक में विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायण गोयन्काजी का सार्वजनिक प्रवचन है।

❑ **भगवान बुद्ध के महाश्रावक लकुण्डक भद्दिय** *२००६, पृष्ठ १६, रु. १०/-*
इस पुस्तक में 'लकुण्डक भद्दिय' का संक्षिप्त जीवनवृत्तांत है।

❑ **गौतम बुद्धः जीवन-परिचय और शिक्षा** *२००६, पृष्ठ ४८, रु. ३०/-*
इस पुस्तक में बुद्ध का संक्षिप्त जीवन-परिचय तथा छः ऐतिहासिक संगितियों का वर्णन है।

❑ **भगवान बुद्ध की साम्प्रदायिकता-विहीन शिक्षा** *२००७, पृष्ठ २०, रु. १५/-*

❑ **भगवान बुद्ध के अग्रश्रावक महामोग्गल्लान** *२००८, पृष्ठ १०४, रु. ४५/-*
इस पुस्तक में भगवान बुद्ध के अग्रश्रावक 'महामोग्गल्लान' के संक्षिप्त जीवनवृत्तांत का वर्णन है ।

❑ **क्या बुद्ध नास्तिक थे?** *२००८, पृष्ठ २२८, रु. १००/-*
इस पुस्तक में बताया गया है कि 'आस्तिक' व्यक्ति वह होता है जो अस्तित्व को स्वीकार करे और 'नास्तिक' वह जो अस्तित्व को स्वीकार न करे। इसका निराकरण विस्तारपूर्वक किया गया है ।

❑ **महामानव बुद्ध की महान विद्या : विपश्यना का उद्गम और विकास** *२००९, पृष्ठ २६०, रु. ६२५/-*

❑ **तिपिटक में सम्यक संबुद्ध, (६ भागों में अजिल्द)**
भाग-१ रु. ६५/-, भाग-२ रु. ८५/-, भाग-३ रु. ९०/-, भाग-४ रु. ७५/-, भाग-५ रु. ८०/-, भाग-६ रु. ८५/-

❑ **तिपिटक में सम्यक संबुद्ध, भाग-१** *२००८, पृष्ठ १५६, रु. ६५/-*

❑ **तिपिटक में सम्यक संबुद्ध, भाग-२** *२००८, पृष्ठ २००, रु. ८५/-*

❑ **तिपिटक में सम्यक संबुद्ध, भाग-३** *२००८, पृष्ठ २०८, रु. ९०/-*

❑ **तिपिटक में सम्यक संबुद्ध, भाग-४** *२००८, पृष्ठ १७६, रु. ७५/-*

❑ **तिपिटक में सम्यक संबुद्ध, भाग-५** *२००८, पृष्ठ १८८, रु. ८०/-*

❑ **तिपिटक में सम्यक संबुद्ध, भाग-६** *२००८, पृष्ठ २०८, रु. ८५/-*
तिपिटक के आधार पर बुद्ध के उपदेशों की गहन व्याख्या। पू. गुरुजी ने बुद्ध के उपदेशों को सविस्तार, पालि के बहुत से उद्धरण तथा उनके हिन्दी में अर्थ देकर समझाया है।

❑ **भगवान बुद्ध के महाश्रावक महाकस्सप** *२००९, पृष्ठ ७६, रु. ४०/-*

❑ **महामानव बुद्ध की महान विद्या : विपश्यना का उद्गम और विकास** *२०१०, पृष्ठ १४४, रु. १४५/-*
"बुद्धजीवन-चित्रावली" का संक्षिप्त वर्णन इस पुस्तक में है ।

❑ **अनाथपिण्डिक** *२०१०, पृष्ठ १२०, रु. ५०/-*

❑ **किसागोतमी** *२०१०, पृष्ठ ४४, रु. ३०/-*
"किसागोतमी" अपने प्यारे बच्चे की मृत्यु होने पर भगवान बुद्ध के पास आयी और भगवान की वाणी सुनकर नितांत दुःख-विमुक्ति के मार्ग पर प्रतिष्ठित हुई ।

❑ **चित्त गृहपति एवं हत्थक आळवक** *२०१०, पृष्ठ ६०, रु. ३५/-*
इस पुस्तिका में बुद्ध में अपार श्रद्धा रखने वाले तथा उनके धर्मोपदेश से गहरे रूप से प्रभावित दो गृहस्थों की प्रेरणादायिनीं जीवनियां वर्णित हैं।

❑ **खुशियों की राह** *१९९३, पृष्ठ ४८, रु. १५०/-*
चित्रों के माध्यम से बच्चों को आनापान ध्यान की भावना सिखाने के लिए यह बड़ी ही उपयोगी पुस्तक है।

❑ **विसाखा मिगारमाता** *२०११, पृष्ठ ८८, रु. ४५/-*
इस पुस्तक में आदर्श नारी एवं भगवान बुद्ध में अत्यंत श्रद्धा रखने वाली, दान देनेवालियों में अग्र विसाखा मिगारमाता का जीवन वृत्तान्त तो है ही साथ ही आदर्श नारी के गुणों का भी वर्णन है।

❑ **मगधराज सेनिय बिम्बिसार** *२०१०, पृष्ठ ११६, रु. ५५/-*

❑ **बुद्धसहस्सनामावली (पालि एवं हिंदी)** *२०१०, पृष्ठ ७०, रु. ३५/-*

❑ **भगवान बुद्ध के उपस्थाक आनन्द** *२०११, पृष्ठ २३२, रु. १००/-*

❑ **जीने की कला** *२०११, पृष्ठ १८८, रु. ७०/-*

❑ **परम तपस्वी श्री रामसिंह जी** *२०११, पृष्ठ १५२, रु. ५५/-*

❑ **भगवान बुद्ध की अग्रउपासिकाएं खुज्जुत्तरा एवं सामावती तथा उत्तरानन्दमाता** *२०११, पृष्ठ ४८, रु. २५/-*

❑ **विपश्यना पत्रिका संग्रह भाग - १** *२०१२, पृष्ठ २२४, रु. ८०/-*

❑ **विपश्यना पत्रिका संग्रह भाग - २** *२०१२, पृष्ठ २०८, रु. ७५/-*

❑ **आदर्श दंपति नकुलपिता एवं नकुलमाता** *२०१२, पृष्ठ २८, रु. २५/-*

❑ **तिक-पट्ठान (संक्षिप्त रूपरेखा)** *२०१२, पृष्ठ ६८, रु. ३५/-*

❑ **भगवान बुद्ध के अग्रश्रावक सारिपुत्त** *२०१३, पृष्ठ १५६, रु. ६५/-*

❑ **बरमा में लिखी गयी मेरी कविताएं** *२०१३, पृष्ठ १९२, रु. ३००/-*

❑ **वाहिय दारुचीरिय एवं भद्दा कुण्डलकेसा** *२०१३ पृष्ठ ४४, रु. ३०/-*

❑ **राहुल एवं रट्ठपाल** *२०१३ पृष्ठ ७२, रु. ४०/-*

❑ **पुण्ण मन्ताणिपुत्त एवं धम्मदिन्ना** *२०१३ पृष्ठ ४८, रु. ३०/-*

❑ **सोण कोळिविस एवं सोणा** *२०१३ पृष्ठ ३६, रु. ३०/-*

❑ **राहुलमाता (यशोधरा)** *२०१३ पृष्ठ ५६, रु. ३५/-*

❑ **भगवान बुद्ध के महाश्रावक आयुष्मान अनुरुद्ध** *२०१३ पृष्ठ ६०, रु. ३५/-*

❑ **विपश्यना पत्रिका संग्रह भाग - ३** *२०१४ पृष्ठ १७२, रु. ७४/-*

❑ **विपश्यना पत्रिका संग्रह भाग - ४** *२०१४ पृष्ठ २००, रु. ८४/-*

❑ **खेमा एवं उप्पलवण्णा** *२०१४ पृष्ठ ४८, रु. ३०/-*

❑ **पटाचारा एवं भद्दा कापिलानी** *२०१४ पृष्ठ ४४, रु. ३०/-*

❑ **विपश्यना पत्रिका संग्रह भाग - ५** *२०१५, पृष्ठ २०८, रु. ८०/-*

❑ **विपश्यना पत्रिका संग्रह भाग - ६** *२०१५, पृष्ठ २२०, रु. ८५/-*

❑ **आत्म-कथन भाग-२** *२०१६ पृष्ठ १९२, रु. ८०/-*

❑ **भगवान बुद्ध की अग्रश्राविका महापजापति गोतमी** *२०१५ पृष्ठ ४४, रु. ३०/-*

❑ **चार महत्त्वपूर्ण लेखः लोक गुरु बुद्ध, देश की बाह्य सुरक्षा, गणराज्य की सुरक्षा कैसे हो!, शाक्यों और कोलियों के गणतंत्र का विनाश क्यों हुआ?** *२०१६ पृष्ठ ६४, रु. ३५/-*

❑ **मेत्ताविहारिणी माताजी** *२०१६, पृष्ठ १४४, रु. ८०/-*

❑ **विपश्यना पत्रिका संग्रह भाग - ७** *२०१६, पृष्ठ २५२, रु. १००/-*

❑ **भगवान बुद्ध के महाश्रावक उपालि** *२०१७, पृष्ठ ४४, रु. ३०/-*

❑ **मगधनरेश वैदेहीपुत्र अजातशत्रु** *२०१७, पृष्ठ ६०, रु. ४०/-*

❑ **विपश्यना पत्रिका संग्रह भाग - ८** *२०१७, पृष्ठ २५६, रु. ११०/-*

❑ **पातञ्जल योगः एक सार्वजनिक प्रवचन** *२०१७, पृष्ठ ३२, रु. ३०/-*

❑ **भगवान बुद्ध के श्रावक अञ्ञासिकोण्डञ्ञ** *२०१७, पृष्ठ ३२, रु. ३०/-*

❑ **सुखी हों** *२०१७, पृष्ठ ८४, रु. १३०/-*

❑ **प्रारंभिक पालि** *२०११, पृष्ठ १५८, रु. ८५/-*
सीधे रचना के माध्यम से पालि व्याकरण सिखाने के लिये यह पुस्तक बड़ी उपयोगी है। लिली डे सिलवां द्वारा अंग्रेजी में लिखी पुस्तक का यह हिन्दी अनुवाद है।

❑ **प्रारंभिक पालि की कुंजी** *२०११, पृष्ठ ८२, रु. ५०/-*

❑ **धम्म-वंदना (पालि-हिन्दी)** *२००६, पृष्ठ ११२, रु. ५०/-*

❑ **धम्मपद (पालि-हिन्दी)** *२००१, पृष्ठ १०८, रु. ५०/-*
धम्मपद की गाथाओं का हिन्दी अनुवाद।

❑ **बुद्धगुणगाथावली (पालि)** *१९९९, पृष्ठ १७०, रु. ३०/-*

❑ **बुद्धसहस्सनामावली (पालि)** *१९९८, पृष्ठ ६४, रु. १५/-*

❑ **महासतिपट्ठानसुत्त (समीक्षा के साथ अनुवाद)** *१९९६, पृष्ठ १४८, रु. ६५/-*
महासतिपट्ठानसुत्त में भगवान बुद्ध ने साधना के बारे में विस्तार से बताया है। यह पुस्तक इस सुत्त का अनुवाद है। साथ ही इसमें पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या भी दी गयी है।

❑ **महासतिपट्ठानसुत्त (अनुवाद)** *१९९६, पृष्ठ ६४, रु. ३५/-*

राजस्थानी प्रकाशन

❑ **जागो लोगां जगत रा** *१९८८, पृष्ठ २६०, रु. ४५/-*

❑ **परिभाषा धरम री** *२००६, पृष्ठ ३६, रु. १०/-*

पंजाबी

❑ **धर्मः आदर्श जीवन का आधार** *२०१२, पृष्ठ ११४, रु. ५०/-*

❑ **निर्मल धारा धर्म की** *२०१२, पृष्ठ १६८, रु. ७०/-*

❑ **मंगल जगे गृही जीवन में** *२०१४, पृष्ठ ११२, रु. ५०/-*

❑ **किसागोतमी** *२०१४, पृष्ठ ४०, रु. ३०/-*

उर्दू

❑ **जीने का हुनर** *२००९, पृष्ठ २२०, रु. ७५/-*

ENGLISH PUBLICATIONS

❑ **Sayagyi U Ba Khin Journal**
1991, 320 pages. Rs 325/-
This journal commemorates Sayagyi's exemplary life and teachings. It contains his discourses, biographical sketches of his life and the lives of the teachers who preceded him as well as articles on various aspects of Vipassana.

❑ **Essence of Tipitaka by U Ko Lay**
1995, 240 pages. Rs 155/-

❑ **The Art of Living by William Hart**
1988, 184 pages. Rs 100/-
A full-length study of the teaching of Vipassana useful both for meditators and non-meditators alike. Includes illustrative stories as well as answers to student's questions that convey a vivid sense of the teaching.

❑ **The Discourse Summaries**
1987, 112 pages. Rs 65/-
Summaries of the evening discourses by S.N. Goenka given during a ten-day course of Vipassana.

❑ **Healing the Healer & The Experience of Impermanence by Dr Paul Fleischman**
1991, 44 pages. Rs 45/-
It describes the benefit of Vipassana to those who are serving in the medical profession.

❑ **Come People of the World**
1989, 54 pages. Rs 40/-
Translations of selected Hindi couplets from Goenkaji's chantings.

❑ **Gotama the Buddha: His Life and His Teaching**
1992, 48 pages. Rs 50/-
A brief sketch of the life and teaching of the Buddha and a description of the six historical Councils.

❑ **The Gracious Flow of Dharma**
1994, 88 pages. Rs 65/-
Condensed from three-day public talks of S.N. Goenka explaining the true meaning of Dhamma (Dharma in Sanskrit), which has now been mistakenly used to refer to 'sect' or 'sectarianism'. Goenkaji explains in detail how to live a good Dhammic life - a life full of peace and harmony through the practice of Vipassana.

❑ **Discourses on Satipatthana Sutta**
1999, 144 pages. Rs 100/-
Evening discourses by S.N. Goenka during the 8-day course of meditation during which he expounds the Mahasatipatthana Sutta.

❑ **The Wheel of Dhamma Rotates**
2012, 366 pages. Rs 850/-

❑ **Dharma: Its True Nature**
1998, 92 pages. Rs 125/-
A collection of papers presented at the International Seminar sponsored by V.R.I. at Dhammagiri, Igatpuri in May 1995.

❑ **Vipassana: Its Relevance to the Present World**
2002, 160 pages. Rs 160/-
A collection of papers presented at the International Seminar sponsored by V.R.I. in New Delhi in April 1994. The papers focus on Vipassana's impact in the fields of education, prison reforms, improved management in business and Government.

❑ **Vipassana Addictions & Health (Seminar 1989)**
1990, 88 pages. Rs 115/-
A collection of papers presented at the International Seminar sponsored by V.R.I. at Dhamma Giri, Igatpuri in 1989. It focuses on the beneficial effects of Vipassana on drug addicts and general health.

❑ **The Importance of Vedana and Sampajanna (Seminar 1990)** *1990, 144 pages. Rs 165/-*
This covers the important topic of the Buddha's teaching "Vedana and Sampajanna" in great detail.

❑ **Pagoda Seminar 1997** *1997, 140 pages. Rs 80/-*

शेष पुस्तकों की सूची अगले अंक में